

'खिड़की' (लेखिका: अंजू खरबंदा)

പ്രധാന പോയിന്റുകൾ (Key Points)

- ബിंदു 1: शादी का बुलावा (വിവാഹത്തിനുള്ള ക്ഷണം)**
 - ഹിഷ്യാർപൂർ സെ ഷാദീ കാ ബുലാവാ അയാ ഥാ ।
 - ഹോഷിയാർപൂരിൽ നിന്ന് ഒരു വിവാഹക്ഷണം വന്നിരുന്നു.
- ബിंदു 2: यात्रा और कोच (യാത്രയും കോച്ചും)**
 - লেখക ने ए.सी. के बजाय जनरल कोच से सफ़र करना तय किया ताकि आनंद लिया जा सके ।
 - യാത്ര ആസ്വദിക്കാനായി എ.സി. കോച്ചിന് പകരം ജനറൽ കോച്ചിൽ പോകാൻ എഴുത്തുകാരൻ തീരുമാനിച്ചു.
- ബിंदു 3: समय और स्थान (സമയവും സ്ഥലവും)**
 - दिल्ली से होशियारपुर तक का सफ़र लगभग आठ घंटे का था ।
 - ഡൽഹിയിൽ നിന്ന് ഹോഷിയാർപൂർ വരെ ഏകദേശം എട്ട് മണിക്കൂർ യാത്രയുണ്ടായിരുന്നു.
- ബിंदു 4: युवती का आगमन (യുവതിയുടെ വരവ്)**
 - Hindi:** रेलगाड़ी में एक युवती जम्मू की शॉलें बेचने आई ।
 - Malayalam:** തീവണ്ടിയിൽ ജമ്മുവിൽ നിന്നുള്ള ഷാളുകൾ വിൽക്കാൻ ഒരു യുവതി വന്നു.
- ബിंदു 5: मोल-भाव (വിലപേശൽ)**
 - युवती ने एक शॉल की कीमत अढ़ाई सौ (250) बताई, लेकिन पत्नी ने उसे डेढ़ सौ (150) में खरीद लिया ।
 - യുവതി ഒരു ഷാളിന് 250 രൂപ വില പറഞ്ഞു, എന്നാൽ എഴുത്തുകാരന്റെ ഭാര്യ അത് 150 രൂപയ്ക്ക് വിലപേശി വാങ്ങി.
- ബിंदു 6: युवती की दशा (യുവതിയുടെ അവസ്ഥ)**
 - कम कीमत सुनकर युवती का गला रुँध गया और उसकी आँखें भर आई ।
 - കുറഞ്ഞ വില കേട്ടപ്പോൾ ആ യുവതിയുടെ തൊണ്ട ഇടറുകയും കണ്ണുകൾ നിറയുകയും ചെയ്തു.
- ബിंदു 7: लेखक की अनुभूति (എഴുത്തുകാരന്റെ തിരിച്ചറിവ്)**
 - युवती को देखकर लेखक को अपने पिता की याद आई, जो रेलगाड़ी में सामान बेचते थे ।
 - ആ യുവതിയെ കണ്ടപ്പോൾ എഴുത്തുകാരന് തന്റെ അച്ഛനെ ഓർമ്മ വന്നു, അദ്ദേഹവും തീവണ്ടിയിൽ സാധനങ്ങൾ വിൽക്കുന്നവനായിരുന്നു.

शब्द (Word)	समान अर्थ (Saman Arth)	മലയാലമ (Malayalam)	अंग्रेजी (English)
सफ़र	यात्रा	യാത്ര	Journey
तोल-मोल	मोल-भाव / भाव-ताव	വിലപേശൽ	Bargaining
नमी	गीलापन (आँसू)	ഇഴുൽപ്പം / കണ്ണുനീർ	Moisture / Tears
अतीत	भूतकाल	ഭൂതകാലം	Past
इसरार	आग्रह / ज़िद	നിർബന്ധം പിടിക്കുക	To insist

शब्द (Word)	समान अर्थ (Saman Arth)	मलयालम (Malayalam)	अंग्रेजी (English)
बुलावा	निमंत्रण	ക്ഷണം	Invitation
मशगूल	व्यस्त / लीन	ജോലിയിൽ മുഴുകുക	Busy / Occupied
झट	तुरंत / जल्दी	പെട്ടെന്ന്	Quickly / Instantly
परेशानी	मुसीबत / कठिनाई	ബുദ്ധിമുട്ട്	Trouble / Difficulty
दस्तक देना	आगमन होना	വന്നുവരുക	To knock / Arrival
ना-नुकुर	आनाकानी / मना करना	വിസമ്മതം	Reluctance / Refusal
झपटना	तेज़ी से पकड़ना	പെട്ടെന്ന് പിടിച്ചെടുക്കുക	To snatch
अढ़ाई सौ	दो सौ पचास	ഇരുന്നൂറ്റി അൻപത്	Two hundred and fifty
आँखें तरेरना	गुस्से से देखना	ദേഷ്യത്തോടെ നോക്കുക	To stare angrily
गला रूंधना	आवाज़ भारी होना	വിതുമ്പുക	Voice choking (due to emotion)

Exam Oriented Questions

I. एक शब्द या वाक्य में उत्तर दें

- लेखक और उनका परिवार कहाँ जा रहे थे?
 - उत्तर: होशियारपुर, एक शादी में।
- युवती रेलगाड़ी में क्या बेच रही थी?
 - उत्तर: जम्मू की शॉलें।
- लेखक को युवती को देखकर किसकी याद आई?
 - उत्तर: अपने पिता की।

II. Short Answer Questions

1. "ए.सी. के बजाय जनरल कोच से सफ़र का आनंद लेना" - इसका क्या आशय हो सकता है?
 - जनरल कोच में आम लोगों के जीवन को करीब से देखने का मौका मिलता है।
 - वहाँ विभिन्न प्रकार के लोग और उनकी कहानियाँ देखने को मिलती हैं, जो बंद ए.सी. डिब्बे में संभव नहीं है।
2. युवती का गला क्यों रूँध गया और उसकी आँखें क्यों भर आईं?
 - जब पत्नी ने 250 रुपये की शॉल के लिए केवल 100 रुपये देने को कहा, तो युवती को अपनी मेहनत का उचित मूल्य न मिलता देख दुःख हुआ।
 - वह अपनी गरीबी और मजबूरी के कारण भावुक हो गई।
3. "वो एक बार में ही डेढ़ सौ में मान गई। गलती की, थोड़ा तोल-मोल और करना चाहिए था!" - पत्नी के इस कथन से किस मनोभाव का पता चलता है?
 - इससे मध्यमवर्गीय लोगों की **ज्यादा बचत करने की प्रवृत्ति** और **उपभोक्तावादी सोच** का पता चलता है।
 - यह दूसरों की मजबूरी के प्रति संवेदनहीनता को भी दर्शाता है।

III. विश्लेषणात्मक प्रश्न (Long Answer Questions)

1. लेखक के पिता और शॉल बेचने वाली युवती में क्या समानता थी?
 - दोनों ही अपना और परिवार का पेट भरने के लिए रेलगाड़ी में मेहनत करते थे।
 - दोनों की आँखों में 'थकान और नमी' (मजबूरी के आंसू) एक समान थी।
 - दोनों ही कड़ा संघर्ष करने वाले श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।
 2. कहानी का शीर्षक 'खिड़की' क्यों रखा गया है?
 - **भौतिक खिड़की:** जिससे बच्चे बाहर का नज़ारा देखते हैं।
 - **मानसिक खिड़की:** जिससे लेखक अपने 'अतीत' में झाँकते हैं और समाज की वास्तविकता को समझते हैं।
-
-

III. Long Answer Questions

1. लेखक के पिता और शॉल बेचने वाली युवती में क्या समानता थी?

- दोनों ही अपना और परिवार का पेट भरने के लिए रेलगाड़ी में मेहनत करते थे।
- दोनों की आँखों में 'थकान और नमी' (मजबूरी के आंसू) एक समान थी।
- दोनों ही कड़ा संघर्ष करने वाले श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

2. कहानी का शीर्षक 'खिड़की' क्यों रखा गया है?

- **भौतिक खिड़की:** जिससे बच्चे बाहर का नज़ारा देखते हैं।
- **मानसिक खिड़की:** जिससे लेखक अपने 'अतीत' में झाँकते हैं और समाज की वास्तविकता को समझते हैं।

1. लेखक की डायरी (Diary Entry)

"रेलगाड़ी के अनुभव ने पति को अपने पिता की याद दिलाई। उसकी डायरी लिखें।"

10 अक्टूबर 2026, रविवार

आज का दिन मेरे लिए यादों से भरा रहा। हमने दिल्ली से होशियारपुर के लिए जनरल कोच में सफ़र किया। सफ़र के दौरान एक युवती जम्मू की शॉलें बेचने आई। उसने बहुत इसरार किया। पत्नी ने उससे खूब तोल-मोल किया। जब वह शॉलें बेचकर गई, तो उसकी आँखों में एक नमी थी। उसे देखकर मुझे अपने पिताजी की याद आ गई। वे भी रेलगाड़ी में सामान बेचते थे और जब थके-हारे घर आते थे, तो उनकी आँखों में भी वही नमी होती थी। आज खिड़की से झाँकते हुए मुझे एहसास हुआ कि मेहनत करने वालों का संघर्ष हर जगह एक जैसा है।

2. 'युवती की डायरी' (Diary of the girl)

10 अक्टूबर 2026, रविवार

आज का दिन मेरे लिए बहुत कठिन रहा। सुबह से रेलगाड़ी में भारी गठर उठाकर शॉल बेच रही थी। एक कोच में एक परिवार मिला। उनकी तोल-मोल करने की आदत देखकर मेरा मन दुखी हो गया। अढ़ाई सौ की शॉल के लिए उन्होंने बहुत कम दाम लगाए। आखिर में अपनी मजबूरी के कारण मैंने डेढ़ सौ रुपये में शॉल दे दी। जब मैं शॉल दे रही थी, तो मेरा गला रूँध गया और आँखों में नमी आ गई। लेकिन क्या करूँ? गरीबी इंसान को सब कुछ सहने पर मजबूर कर देती है। भगवान! बस इतनी शक्ति देना कि मैं मेहनत करके अपना और अपने परिवार का पेट पाल सकूँ।

3. पटकथा (Script)

दृश्य: एक

स्थान : रेलगाड़ी का जनरल कोच

समय : सुबह 11 बजे

पात्र और वेशभूषा : लेखक: मध्यम आयु (करीब 45 वर्ष), साधारण यात्रा के कपड़े।

पत्नी: मध्यम आयु, (करीब 40 वर्ष), साधारण घरेलू महिला की वेशभूषा।

युवती (शॉल बेचने वाली): करीब 20-22 वर्ष की उम्र, चूड़ीदार पहने हुए।

दृश्य का विवरण : रेलगाड़ी का जनरल कोच यात्रियों से भरा हुआ है। लेखक और उनकी पत्नी अपनी सीट पर बैठे बातें कर रहे हैं। बच्चे खिड़की वाली सीट पर बाहर देख रहे हैं। तभी एक युवती रंग-बिरंगी शॉलों का भारी गठर लिए कोच में प्रवेश करती है।

संवाद):

युवती: (पत्नी के पास जाकर और भारी गठर नीचे रखते हुए) दीदी! जम्मू की शॉल ले लो! बहुत बढ़िया है!

पत्नी: (शॉल को छूकर देखते हुए) कितने की है?

युवती: अढ़ाई सौ (250) की एक!

पत्नी: इत्ती महँगी! अगर पाँच पीस लूँ तो कितने की दोगी?

युवती: दो सौ रुपए पर पीस ले लेना दीदी!

पत्नी: नहीं! सौ रुपए पर पीस दोगी?

युवती: (दुखी स्वर में) दीदी! सौ तो बहुत कम है!

पत्नी: डेढ़ सौ (150) रुपए पर पीस! इससे एक रुपया ज़्यादा नहीं दूँगी।

युवती: (कुछ देर उदासी से सोचते हुए और फिर हार मानकर) अच्छा दीदी! ठीक है, ले लो। जो रंग पसंद हो चुन लो।

4. 'लेखक की पत्नी' का चरित्र-चित्रण तैयार करें।

चरित्र-चित्रण: लेखक की पत्नी

अंजू खरबन्दा की सुन्दर कहानी 'खिड़की' के एक मुख्य पात्र है लेखक की पत्नी। वह एक साधारण मध्यमवर्गीय महिला है। वह खरीदारी में बहुत चतुर है। उसे चीजों का तोल-मोल करना अच्छी तरह आता है। जब शॉल बेचने वाली युवती शॉल की कीमत अढ़ाई सौ रुपये बताती है, तो पत्नी उसे कम करके डेढ़ सौ रुपये पर ले आती है। वह स्वभाव से थोड़ी कठोर भी है; जब लेखक बीच में बोलना चाहते हैं, तो वह उन्हें आँखें तरेरकर चुप करा देती है। उसमें सहानुभूति की कमी दिखती है। उसे युवती की आँखों की नमी और गरीबी का अहसास नहीं होता। वह केवल अपने फायदे के बारे में सोचने वाली है।

5. 'युवती' (शॉल बेचने वाली) का चरित्र-चित्रण (Character Sketch)

चरित्र-चित्रण: युवती (शॉल बेचने वाली)

अंजू खरबन्दा की सुन्दर कहानी 'खिड़की' के एक मुख्य पात्र है शॉल बेचने वाली युवती। वह एक साँवली-सलोनी और मेहनती लड़की है। वह रेलगाड़ी में शॉलों का भारी गठर उठाकर बेचती है। वह बहुत विनम्र है और ग्राहकों से सामान खरीदने के लिए इसरार करती है। जब लेखक की पत्नी बहुत तोल-मोल करती है, तो वह अपनी मजबूरी के कारण कम कीमत पर शॉल दे देती है। उस समय उसका गला रूँध जाता है और उसकी आँखों में नमी आ जाती है। वह समाज के गरीब और संघर्ष करने वाले वर्ग का प्रतीक है। उसे देखकर लेखक को अपने पिताजी की याद आती है।

6. 'खिड़की' कहानी के आधार पर, लेखक अपने मित्र को सफ़र के अनुभव और उस युवती के बारे में बताते हुए पत्र लिख रहे हैं। लेखक का वह पत्र तैयार करें।

	स्थान: तारीख:
प्रिय मित्र,	
तुम कैसे हो? आशा है कि वहाँ सब कुशल होगा। मैं तुम्हें अपने एक सफ़र के बारे में बताने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ। हम सब एक शादी के लिए होशियारपुर गया था। ए.सी. के बजाय जनरल कोच में सफ़र किया।	
रेलगाड़ी में एक साँवली-सलोनी युवती जम्मू की शॉलें बेचने आई। मेरी पत्नी ने उससे बहुत तोल-मोल किया और अढ़ाई सौ रुपये की शॉल केवल डेढ़ सौ रुपये में खरीद ली। शॉल देते समय उस युवती की आँखों में नमी थी। उसे देखकर मुझे अपने पिताजी की याद आ गई। वे भी इसी तरह रेलगाड़ी में सामान बेचकर कड़ी मेहनत करते थे।	
सच में, ट्रेन की वह 'खिड़की' मेरे लिए अतीत को देखने का एक ज़रिया बन गई। घर के सभी को मेरा प्रणाम कहना।	
	तुम्हारा प्रिय मित्र, लेखक (हस्ताक्षर)
सेवा में, नाम पता	